रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

विश्व भाषा बनने की दिशा में उत्तरोत्तर अग्रसर है हिन्दी–कुलपति प्रो. मिश्र

हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का शुभारंभ

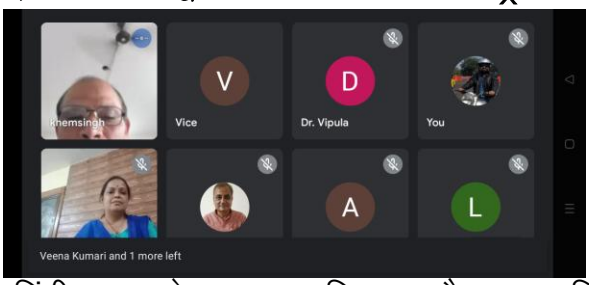

जबलपुर 12 सितम्बर। हिंदी का क्षेत्र बहुत विशाल है तथा हिंदी की अनेक बोलियां (उपभाषाएं) हैं। इनमें से कुछ में अत्यंत उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना भी हुई है। यदि निकट भविष्य में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था निर्मित होती है और संयुक्त राष्ट्र संघ का लोकतांत्रिक ढंग से विस्तार करते हुए भारत को स्थायी प्रतिनिधित्व मिलता है तो वह यथाशीघ्र इस शीर्ष विश्व संस्था की भाषा बन जाएगी। वर्तमान समय भारत और हिंदी के तीव्र एवं सर्वोन्मुखी विकास का द्योतन कर रहा है और हम सब से यह अपेक्षा कर रहे हैं कि हम जहां भी हैं, जिस क्षेत्र में भी कार्यरत हैं वहां ईमानदारी से हिंदी और देश के विकास में हाथ बंटाएं। हिंदी विश्व भाषा बनने की दिशा में उत्तरोत्तर अग्रसर है। ये विचार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने रविवार को आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार के शुभारंभ कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा 'वर्तमान समय में हिंदी की उपादेयता' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार के प्रारंभ में विषय प्रर्वतन करते हुए संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक ने बताया कि जब हम उपर्युक्त प्रतिमानों पर हिंदी का परीक्षण करते हैं तो पाते हैं कि वह न्यूनाधिक मात्रा में प्रायः सभी निष्कर्षों पर खरी उतरती है। आज वह विश्व के सभी महाद्वीपों तथा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रों– जिनकी संख्या लगभग एक सौ चालीस है– में किसी न किसी रूप में प्रयुक्त होती है। वह विश्व के विराट फलक पर नवल चित्र के समान प्रकट हो रही है। आज वह बोलने वालों की संख्या के आधार पर चीनी के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा बन गई है। प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार विश्वभर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय है। अंग्रेजी तो तीसरे क्रमांक पर पहुँच गई है।

हिंदी प्रचार–प्रसार का लें संकल्प –

मुख्य अतिथि के रूप में माननीय डॉ. खेम सिंह डहेरिया, मान. कुलपति अटिल बिहारी बाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल ने बताया कि आज जरूरत इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पाठ–सामग्री उपलब्ध कराने में तेजी लाएँ। इसके लिए समवेत प्रयास की जरूरत है। यह तभी संभव है जब लोग अपने दायित्वबोध को गहराइयों तक महसूस करें और सुदृढ़ इच्छाशक्ति के साथ संकल्पित हों। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. स्नेह ठाकुर निदेशक आरसी यूनिवर्सिटी बेलग्रेड, कनाडा ने कहा कि आज समय की माँग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हों ताकि तमाम निष्कर्षों एवं प्रतिमानों पर कसे जाने के लिये हिंदी को सही मायने में विश्व भाषा की गरिमा प्रदान कर सकें। विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. शकुंतला कालरा, दिल्ली, प्रो. स्मृति शुक्ल शास. मानकुंवरबाई महिला कॉलेज ने हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डाला। संचालन हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग की श्रीमती राखी चतुर्वेदी एवं आभार प्रदर्शन डॉ. नीलम दुबे ने किया। इस अवसर पर हिंदी विभाग की डॉ. विपुला सिंह सहित अन्य विद्वतजन मौजूद रहे।